ISSN 0974 1666

सी.सी.आर.यू.एम

न्यूज़लेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद की द्वैमासिक पत्रिका

खंड 35 • अंक 3–4 मई–अगस्त 2015

राष्ट्रपति भवन परिसर में आयुष सम्पूर्ण स्वास्थ्य क्लिनिक

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी ने 25 जुलाई को राष्ट्रपति भवन परिसर में, अपने कार्यकाल के तीन वर्ष की समाप्ति पर, आयुष सम्पूर्ण स्वास्थ्य क्लिनिक का उद्घाटन किया। क्लिनिक की स्थापना, राष्ट्रपति भवन परिसर वासियों हेतु आयुष नाम से ज्ञात स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों द्वारा साकल्यवादी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने और इन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रपति भवन द्वारा आयुष मंत्रालय के सहयोग से की गई है।

आयुष सम्पूर्ण स्वास्थ्य क्लिनिक का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि मेरे कार्यकाल के तीन साल के दौरान, परिसर वासियों के कल्याण हेतु बहुत से क़दम उठाए गए हैं। उन्होनें विभिन्न कार्यक्रमों को सफ़ल बनाने में भारत सरकार एवं राष्ट्रपति भवन के सभी कर्मचारियों की कृतज्ञता प्रकट की।

आयुष सम्पूर्ण स्वास्थ्य क्लिनिक एक अनूठी परियोजना है जहां सभी आयुष पद्धतियां–आयुर्वेद, यूनानी, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, सिद्धा एवं होम्योपैथी एक ही स्थान पर राष्ट्रपति भवन कर्मियों व परिसर वासियों की चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एकत्र हैं। आयुष मंत्रालय, अपनी अनुसंधान परिषदों द्वारा राष्ट्रपति भवन परिसर के शेड्यूल बी स्थित क्लिनिक को जनशक्ति एवं चिकित्सीय सुविधायें प्रदान कर रहा है।

माननीय राष्ट्रपति ने डॉ. ख़ालिद एम. सिद्दीक़ी, उपमहानिदेशक, केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद के साथ क्लिनिक के यूनानी कक्ष का दौरा किया और रेजीमेनल विधियों से संबंधित सुविधाएं उपलब्ध कराने की कोशिशों को सराहा।

उद्घाटन समारोह में राष्ट्रपति भवन के कर्मियों के अतिरिक्त श्री नजीब जंग, उपराज्यपाल, दिल्ली, श्री श्रीपद यस्सो नायक, राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, नई दिल्ली सीट से

माननीया राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी 25 जुलाई को राष्ट्रपति भवन परिसर में आयुष सम्पूर्ण स्वास्थ्य क्लिनिक का उद्घाटन करते हुए। उनकी बॉंयी और हैं दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर श्री नजीब जंग और आयुष के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री श्रीपाद नाइक।

माननीया राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी आयुष सम्पूर्ण स्वास्थ्य क्लिनिक के यूनानी कक्ष में मौजूद सुविधाओं के बारे में डॉ. ख़ालिद एम. सिद्दीकी, उपमहानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से जानकारी लेते हुए।

लोकभा सदस्य श्रीमती मीनाक्षी लेखी, राष्ट्रपति की सचिव श्रीमति ओमिता पॉल, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री निलांजन सान्याल, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक प्रो. रईसुर्रहमान और आयुष की विभिन्न अनुसंधान परिषदों के महानिदेशक सम्मिलित हुए।

• *रिपोर्टः नियाज़ / अनुवादः सलीम*

राजभाषा ज्ञान को परिष्कृत करने के लिए कार्यशाला

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने 29–30 जून को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली में एक दो–दिवसीय कार्यशाला का अयोजन किया जिस का उद्देश्य नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अंतर्गत सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों में राजभाषा ज्ञान को परिष्कृत करना था।

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. केसरी लाल वर्मा ने बताया कि आयोग ने 22 भाषाओं में प्रशासनिक शब्दावली तैयार की है।

इसके अतिरिक्त शोध कार्य, विज्ञान पत्रिकाएं और साहित्य प्रकाशन में शब्दावली आयोग की मुख्य भूमिका रही है। उन्होनें बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने स्कूल पाठ्य पुस्तक तैयार करने वाली संस्थाओं के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य कर दिया है। प्रो. वर्मा ने अधिकारियों का आह्वान किया कि वह अपने कार्यलयों में कार्यशालाओं का आयोजन कराएं और आयोग द्व ारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उठाएं।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री इन्द्रदेव शुक्ला ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी भाषा ऊँचे वर्ग तक सीमित न रहे, इसके लिए इसकी कठिनाइयों को दूर करना चाहिए। हमें गहन चितंन करने की आवश्यकता है कि इसकी कठिनता पाठक को इससे दूर कर रही है। भाषा को सरल बनाने की आवश्यकता है ताकि इसके प्रचार–प्रसार को बढ़ाया जा सके। जो शब्द अधिक प्रयोग किये जा रहे हैं उन्हें हिन्दी भाषा में सम्मिलित किया जाए और अन्य शब्दावलियों को हिन्दी शब्दावली में समाहित किया जाए।

तकनीकी सत्र में कुल आठ व्याख्यान दिए गए। इन व्याख्यानों में हिन्दी पठन–पाठन को बढ़ाने हेतु अखिल भारतीय स्तर पर तकनीकी शब्दों की एकरूपता, राजभाषा और वैज्ञानिक लेखन, राजभाषा अधिनियम और क्रियान्वयन, राजभाषा और तकनीकी शब्दावली आदि विषय शामिल हैं। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् की ओर से डॉ. सलीम सिद्दीक़ी, राजभाषा अनुभाग प्रभारी ने कार्यशाला में भाग लिया।

• *रिपोर्टः नियाज़ / इनपुटः सलीम*

योग – अहं से वयम; स्वयं से समस्ती की यात्राः प्रधानमंत्री

देश के इतिहास में 21 जून को एक नया अध्याय लिखा गया जब संयुक्त राष्ट्र सभा द्वारा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने के प्रस्ताव को पारित करने पर भारत सहित विश्व के 192 देशों ने योग दिवस को एक उत्सव के तौर पर मनाया। नई दिल्ली में आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में एक विशाल योग प्रदर्शन और एक दो–दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेस सम्पन्न हुई।

माननीया प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी नई दिल्ली में 21–22 जून को आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित साकल्यवादी स्वास्थ्य के लिए योग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ समारोह में श्रोतागण को नमस्कार करते हुए। प्रधानमंत्री के दायें हैं श्री श्रीपाद नाइक, आयुष के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), डॉ. नागेंद्र और श्री नीलांजन सान्याल, जबकि बायें हैं वित्त राज्य मंत्री श्री जयंत सिन्हा और योग प्रतिपादक बाबा रामदेव।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने साकल्यवादी स्वास्थ्य के लिए योग पर अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का उद्घाटन करते हुए योग को 'अहं से वयम, स्वयं से समस्ती' की यात्रा बताया। उन्होनें कहा कि अगर हम अपने मानव शरीर को एक अनूठी संरचना के रूप में अनुभव करते हैं तो योग उस उपयागी नियमावली के समान है जिसने उस संरचना की असीम क्षमताओं से हमको अवगत कराया है। उन्होनें इसको स्वयं, अपने शरीर, माहौल और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का एक माध्यम बताया।

प्रधानमंत्री ने प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 10 रूपये और 100 रूपये के सिक्के व 5 रूपये का एक डाक टिकट भी जारी किया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री श्रीपाद यस्सो नाइक, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय ने कहा कि योग सम्पूर्ण मानवता के लिए इस देश का एक महत्वपूर्ण भेंट है। उन्होनें यह भी इंगित किया कि योग का स्वास्थ्य पहलू अत्याधिक महत्वपूर्ण है और आधुनिक चिकित्सा ने भी इसके महत्व को पहचाना है।

वित्त राज्य मंत्री, श्री जयन्त सिन्हा और योग व्याख्याता बाबा रामदेव, डॉ. नागेन्द्र और डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इससे पूर्व राजपथ के 1.4 किमी. स्थान पर 35,985 प्रतिभागियों ने सामूहिक योग प्रदर्शन किया और इसकी शुरूआत योग प्रदर्शन में शामिल प्रधानमंत्री के भाषण से हुई। इस समारोह में स्कूली बच्चे, नेशनल कैड़ेट्स कॉर्पस, केन्द्रीय सुरक्षा बल, महिला पुलिस अधिकारी, केन्द्रीय मंत्री, राजनयिक, विदेशी नागरिक और योग संस्थानों से जुड़े लोग शामिल थे। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद और आयुष मंत्रालय के अधीन अन्य संस्थानों के पदाधिकारी इस आयोजन की तैयारियों में संलग्न रहे और इस कार्यक्रम को सफ़ल बनाने में उन्होनें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

• *रिपोर्टः नियाज़*
अनुवादः सलीम

राष्ट्रीय आरोग्य एक्स्पो 2015 में प्रतिभागिता

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 21–24 मई को तिरुअनन्तपुरम, केरल में आयोजित राष्ट्रीय आरोग्य एक्स्पो 2015 में भाग लिया। इस प्रदर्शनी का आयोजन आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, द्वारा विश्व आयुर्वेद संस्थान, केरल सरकार और राजीव गांधी जैव तकनीकी केन्द्र के सहयोग से आयुष पद्धतियों को बढ़ावा देने और उनको आम लोगों के मध्य लोकप्रिय बनाने हेतु किया गया।

डॉ. एन. ज़हीर अहमद केरल में 21–24 मई को आयोजित राष्ट्रीय आरोग्य एक्स्पो 2015 के दौरान के.यू.चि.अ.प. के स्टाल पर विदेशी आगंतुकों को यूनानी चिकित्सा पद्धति के बारे में बताते हुए।

20 मई को उद्घाटन अवसर पर माननीय श्री श्रीपद यस्सो नायक, केन्द्रीय राज्य मंत्री, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि आयुष (आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) सेवाएं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) तक हर स्तर पर उन्नत की जाएंगी। उन्होनें बताया कि भारतीय वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र स्थापित करने हेतु भारत ने हंगरी, बांग्लादेश, मॉरिशस और नेपाल के साथ द्विपक्षी मुद्दों पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। और अन्य देशों के साथ भी इस योजना पर काम किया जाएगा।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री वी. एस. शिवकुमार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, केरल सरकार ने कहा कि राज्य सरकार के अन्तर्गत आयुष विभाग अगले सप्ताह तक काम करना आरम्भ कर देगा। श्री निलांजन सान्याल, सचिव आयुष मंत्रालय, भारत सरकार उद्घाटन अवसर पर उपस्थित थे और उन्होनें वहां उपस्थित लोगों को सम्बोधित किया।

प्रदर्शनी में 200 कम्पनियों के लगभग 300 स्टाल्स लगाए गए थे। आयुष मंत्रालय के अधीनस्थ संस्थानों के 17 पंडालों में उनके उत्पाद व दी जाने वाली सुविधाओं को प्रदर्शित किया गया। भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं स्वास्थ्य से सम्बन्धित तीन सेमिनार और एक कार्यशाला भी आयोजित की गई। इस अवसर पर आम लोगों के लिए मधुमेह, हृदय रोगों से बचाव, स्नायु रोगय, कैंसर, महिला व बाल स्वास्थ्य व वृद्धों की देखभाल आदि पर आयुष क्लिनिकों की सुविधा भी उपलब्ध थी। इस प्रदर्शनी में देशभर से 700 प्रतिनिधि और चिकित्सक, राजनायिक, विपणन कुशल विशेषज्ञ, नीति निर्धारक, व्यवसायी और विद्यार्थियों की भरपूर भागीदारी रही।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने प्रदर्शनी में भाग लिया और केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चैन्नई के यूनानी चिकित्सकों ने लगभग 280 रोगियों को निःशुल्क उपचारित किया। डॉ. एन. ज़हीर अहमद, डॉ. के. कबीरूद्दीन अहमद, डॉ. मौ. इस्माईल और के.बी. अन्सारी ने विभिन्न रोगों पर व्याख्यान दिए। परिषद् के स्टाल में डिस्पले बोर्ड, पुस्तिकाओं और सफल गाथाओं के माध्यम से अनुसंधानिक गतिविधियों और प्रगति को उजागर किया गया। स्टाल में परिषद् के महत्वपूर्ण प्रकाशन भी प्रदर्शित किए गए।

• *रिपोर्ट: नियाज़ / अनुवाद: सलीम*

हक़ीम अजमल ख़ां पर संगोष्ठी

जामिया में यूनानी मेडिकल कॉलिज स्थापित करने पर विचार

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के उप–कुलपति प्रो. तलत अहमद ने 19 मई को जामिया परिसर में स्थित केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) के हकीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में कहा कि जामिया एलोपैथिक मैडिकल कॉलिज स्थापित करने के अतिरिक्त एक यूनानी मैडिकल कॉलिज स्थापित करने पर विचार कर रहा है।

जामिया परिसर में के.यू.चि.अ.प. द्वारा आयोजित यह गोष्ठी 28 अप्रैल को दोनों संस्थानों के मध्य साहित्यिक अनुसंधान, चिकित्सीय साहित्यिक अनुसंधान और अन्तःविषयों पर शोध से सम्बन्धित समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के बाद, पहला कार्यक्रम था।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. तलत अहमद ने कहा कि जामिया के गणमान्य संस्थापकों में से एक हकीम अजमल ख़ां पर संगोष्ठी को सम्बोधित करना उनके लिए एक उत्सव के समान है। उन्होनें जामिया व के.यू.चि.अ.प. के मध्य समझौता ज्ञापन को एक एतिहासिक फ़ैसला बताते हुए कहा कि इससे विभिन्न क्षेत्रों के शोधकर्त्ताओं को उनके सम्बन्धित कार्यक्षेत्रों में अनुसंधान व विकास को साथ लाने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होनें कहा कि इससे यह संभावना बढ़ी है कि जामिया के बायोकैमिस्ट्री एवं बायाटेक्नोलॉजी संकाय और के.यू.चि.अ.प. के शोधकर्त्ता सहयोगात्मक अनुसंधान कर सकते हैं। उन्होनें उन क्षेत्रों को चिन्हित करने की आवश्यकता पर बल दिया जहां वो नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। उन्होने के.यू.चि. अ.प. के सहयोग से जामिया में एक डिप्लोमा कोर्स शुरू करने की सम्भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर के.यू.चि.अ.प. के महानिदेशक प्रो. रईसुर्रहमान ने कहा कि हकीम अजमल ख़ां अभूतपूर्व व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होनें यूनानी चिकित्सा के विकास में उस समय महत्वपूर्ण योगदान दिया जब यह पद्धति संकटावस्था से गुज़र रही थी। यह उनकी कोशिशों का नतीजा है कि यूनानी चिकित्सक जहां आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध नहीं है, स्वास्थ्य रक्षा में एक महत्वपूर्ण किरदार निभा रहे हैं। यूनानी चिकित्सा को ग्रहण करने पर ज़ोर देते हुए कहा कि इस पद्धति में विभिन्न असंक्रामक रोगों को उपचारित करने का सामर्थ्य है जो आधुनिक चिकित्सा पद्धति में प्रभावी नहीं है। इस पद्धति में सरकार की रूचि को दर्शाते हुए उन्होनें कहा कि भारत सरकार गाज़ियाबाद, यू.पी. में अखिल भारतीय यूनानी चिकित्सा संस्थान स्थापित करने जा रही है।

प्रो. अब्दुल हक़, पूर्व विभागाध्यक्ष, उर्दू संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने

प्रो. रईस–उर–रहमान, प्रो. तलअत अहमद और श्री इरशाद अहमद 19 मई को जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आयोजित हकीम अजमल खाँ पर संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में प्रो. अब्दुल हक़ को सम्मानित करते हुए जबकि डॉ. ख़ालिद एम. सिद्दीकी उन्हें यादगार भेंट कर रहे हैं।

मुख्य भाषण में कहा कि हकीम अजमल ख़ां द्वारा भारत में यूनानी चिकित्सा के प्रोत्साहन से उर्दू भाषा को भी बढ़ावा मिला। यूनानी चिकित्सा के अदृश्य क्षेत्र को इंगित करते हुए उन्होने कहा कि देश में यूनानी मैडिकल संस्थान उर्दू भाषा के विकास में एक बड़ी ताकत हैं और इसी भाषा के माध्यम से यूनानी पद्ध ति की शिक्षा दी जाती है। उन्होनें कहा कि यूनानी साहित्य ने उर्दू के प्रोत्साहन में बहुत सहयोग दिया। उन्होनें करोल बाग़ स्थित दिल्ली विश्व विद्यालय के आयुर्वेदिक एवं यूनानी तिब्बिया कॉलिज को यूनिवर्सिटी का दर्जा दिए जाने की ज़रूरत पर बल दिया और जामिया परिसर में एक यूनानी कॉलिज स्थापित करने और इसके साथ–साथ के.यू.चि. अ.प. के सहयोग से यूनानी चिकित्सा में एक डिप्लोमा कोर्स शुरू करने का सुझाव दिया। श्री इरशाद अहमद, अध्यक्ष, अ.मु. वि., ओल्ड ब्वॉयज़ एसोसिएशन दिल्ली ने अपने अतिथीय भाषण में कहा कि हकीम अजमल ख़ां का व्यक्तित्व चार महत्वपूर्ण विशेषताओं का मिश्रण था। वह एक महान यूनानी चिकित्सक, एक शिक्षाविद और अनेकता में एकता की मिसाल थे। उन्होनें जामिया परिसर में हकीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान की स्थापना को हकीम अजमल ख़ां के प्रति एक बड़ी श्रद्धांजलि बताया।

इससे पूर्व हकीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के प्रभारी अनुसंधान अधिकारी डॉ. सग़ीर अहमद सिद्दीक़ी ने अपने स्वागत भाषण में जामिया परिसर में संस्थान को स्थान उपलब्ध कराने के लिए और के.यू.चि. अ.प. व जामिया के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में अपना रोल निभाने के लिए प्रो. तलत अहमद और श्री इरशाद अहमद का शुक्रिया अदा किया।

हकीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) डॉ. अहमद सईद ने प्रतिष्ठित अतिथियों व प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 19 मई को हकीम अजमल खाँ पर आयोजित संगोष्ठी के सम्मान्य जनसमूह का एक दृश्य।

संगोष्ठी के तकनीकी सत्र की अध्यक्षता परिषद् के उप–महानिदेशक डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी द्वारा की गई। हकीम अजमल ख़ा के जीवन व सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर चार पत्र प्रस्तुत किए गए। हकीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के परामर्शदाता हकीम के.ए.एस. आज़मी द्वारा प्रथम पत्र ''यूनानी चिकित्सा की वैज्ञानिक सम्पदा और हकीम अजमल खां'' नामक शीर्षक से प्रस्तुत किया गया। जमात–ए–इस्लामी हिन्द की तसनीफ़ी अकादमी के हकीम रज़ीउल इस्लाम नदवी ने ''जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना और स्थायीकरण में हकीम अजमल ख़ां की भूमिका'' पेपर प्रस्तुत किया। हकीम फ़ख़रे आलम अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), हकीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा ''हकीम अजमल ख़ां, यूनानी चिकित्सा और जामिया मिल्लिया इस्लामिया'' नामक शीर्षक पर पेपर प्रस्तुत किया गया जबकि संगोष्ठी का अन्तिम पेपर संस्थान के अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) हकीम अहमद सईद ने राष्ट्रीय एवं चिकित्सीय गतिविधियां और हकीम अजमल ख़ां'' शीर्षक पर प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के शिक्षाविद और के.यू.चि. अ.प. मुख्यालय और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित परिषद् संस्थान व एककों के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

• *रिपोर्टः नियाज़*
अनुवादः सलीम

अनुसंधानिक विधितन्त्र पर दिग्विन्यास कार्यशाला

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 08–09 जून को नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में अनुसंधानिक विधितन्त्र पर दो दिवसीय दिग्विन्यास कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य यूनानी चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में परिषद् की गतिविधियों के मूल सिद्धान्त के विषय में नवनियुक्त अनुसंधान अधिकारियों को अवगत कराना था।

09 जून को समापन समारोह के अवसर पर बोलते हुए, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक प्रो. रईसुर्रहमान ने कहा कि पादप औषधियों पर अनुसंधान तीन बातों पर निर्भर करता है (क) रोगियों को दी जाने वाली औषधियां शुद्ध हैं, इसके लिए गुणवत्ता नियन्त्रण और औषधि मानकीकरण आवश्यक है। (ख) रोगियों को दिया जाने वाला उपचार प्रभावी है, इसके लिए उत्तम नैदानिक प्रक्रिया और नैदानिक परीक्षणों की आवश्यकता पड़ती है। (ग) रोगियों को दी जाने वाली औषधियां सुरक्षित हैं इसके लिए पूर्व नैदानिक परीक्षण को आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने आगे कहा कि यह संतुष्टि का विषय है कि परिषद् इन पहलुओं पर कई वर्षों से कार्य कर रही है।

08 जून को अपने स्वागत सम्बोधन में प्रो. रईसुर्रहमान ने कहा कि केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने अनसंधानिक क्षेत्र में काफ़ी कार्य किया परन्तु यूनानी औषधियों की सुरक्षा ओर गुणवत्ता मूल्यांकन के वैधीकरण की आवश्यकता है। उन्होनें कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यूनानी चिकित्सा पद्धति को पूरे विश्व में प्रचलित श्रेष्ठ पद्धतियों में से एक माना है, परन्तु दवाओं की सुरक्षा को लेकर वह चिंतित है। शोधकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए उन्होनें कहा कि अनुसंधान के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उत्साह व सम्पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है।

प्रो. रईस–उर–रहमान संगोष्ठी को संबोधित करते हुए।

डॉ. खालिद एम. सिद्दीक़ी 8–9 जून को नई दिल्ली में केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित अनुसंधानिक विधितन्त्र पर दिगविन्यास कार्यशाला को संबोधित करते हुए। मंच पर हैं (बायें से दायें) प्रो. रईस–उर–रहमान, प्रो. वाई.के. गुप्ता और प्रो. के.एम.वाई. अमीन।

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए, प्रो. के एम.वाई. अमीन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय ने कहा कि यूनानी चिकित्सा पद्धति में निहित इसके अनूठे सिद्धान्तों का अध्ययन से पहले ज्ञान ज़रूरी है। पाश्चात्य चिकित्सा से इस पद्धति की तुलना करते हुए उन्होनें कहा कि दोनों में संबंध नए पुराने का नहीं बल्कि दो भिन्न विधियों का है। यूनानी चिक्त्सिा पद्धति मिज़ाज की रोशनी में शरीर की चर्चा करती है जो प्राकृतिक है जबकि पाश्चात्य पद्धति उप–प्राकृतिक अणुओं की रोशनी में शरीर की चर्चा करती है।

प्रो. वाई. के. गुप्ता, विभागाध्यक्ष, फ़ार्माकॉलजी, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ने कहा कि शोधकर्त्ताओं को विज्ञान को गतिशील रखने के लिए कुछ नया योगदान करना

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा 8–9 जून को नई दिल्ली में आयोजित अनुसंधानिक विधितन्त्र पर दिगविन्यास कार्यशाला के सहभागियों का एक दृश्य।

चाहिए। अनुसंधान में साक्ष्य सृजन के महत्व पर बल देते हुए उन्होनें कहा कि प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभव और साक्ष्य में से अनुसंधान का संबंध साक्ष्य से होता है जो आज की आवश्यकता है। उन्होने अनुसंधान के प्रलेखन और प्रकाशन पर ज़ोर दिया और कहा कि शोध परिणामों को प्रकाशित न करना एक अपराध है और किसी शोध का प्रलेखन न होना, न होने के बराबर है।

परिषद् के उप–महानिदेशक, डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी ने सत्र को सम्बोधित किया और आशा व्यक्त की कि नवनियुक्त अनुसंधान अधिकारी परिषद् के लिए महान परिसम्पत्ति सिद्ध होगें।

तकनीकी सत्र में प्रो. वाई. के. गुप्ता, प्रो. के.एम. वाई. अमीन, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् से डॉ. रॉली माथुर और वल्लभ भाई पटेल चेस्ट इन्स्टीट्यूट के प्रो. ए.रे. ने क्रमशः ''कन्सेप्शन ऑफ़ रिसर्च कुएश्चन एण्ड फ़ार्मुलेटिंग रिसर्च मैथेडोलॉजी एण्ड स्ट्रेटजी फ़ॉर रिसर्च इन यूनानी मैडिसिन'', ''एफ़िकेसी एण्ड सेफ़्टी इवेलुएशन ऑफ़ यूनानी ड्रग्स'', ''एथिकल गाइडलाइन्स; सी.टी.आर.आई. एण्ड हेल्थ रिसर्च'' और ''मैकेनिज़्म ऑफ़ एक्शन, पी.के. एण्ड पी. डी. स्टडीज़ ऑफ़ यूनानी ड्रग्स'' विषयों पर व्याख्यान दिए।

डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी ने भारत में यूनानी चिकित्सा पद्धति की पृष्ठभूमि व आधारभूत संरचना, यूनानी चिकित्सा पद्धति के सिद्धान्त और केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के इतिहास एवं इसकी अनुसंधानिक गतिविधियों व उपलब्धियों पर एक व्यापक प्रस्तुतीकरण दिया।

डॉ. एन.सी. जैन, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने ''साइन्टिफ़िक पेपर राइटिंग एण्ड पब्लिकेशन एथिक्स'' पर बोलते हुए कहा कि एक पेपर में 20 लेखक और एक से अधिक पत्र व्यवहारिक लेखक हो सकते हैं। उन्होनें साहित्यिक चोरी प्रत्याहार और अन्य दुराचार के बारे में भी बताया।

सैन्टिस फ़ार्मा के डॉ. श्रीकान्त गौड़ और परिषद् से डॉ. शारिक़ अली ख़ान, डॉ क़मरूद्दीन और डॉ. निग़हत अंजुम ने क्रमशः इन्फ़ार्मड कन्सेन्ट प्रोसेज़ एण्ड डॉक्यूमेन्टेशन; रिसर्च मैथोडोलॉजी फ़ॉर इवेलुएशन ऑफ़ एफ़िकेसी ऑफ़ फ़स्द; मैथेडौलॉजिकल आस्पेक्टस ऑफ डिज़ाइनिंग ए पेशेन्ट इन्फ़ार्मेशन शीट; और अन्डरस्टैन्डिंग क्लिनिकल ट्रायल प्रोटोकॉल पर प्रस्तुतीकरण किया।

कार्याशला में नवनियुक्त ग्यारह अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के अतिरिक्त परिषद् मुख्यालय व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्य संस्थानों व एककों के अधिकारी भी शामिल हुए। • *नियाज़*

हिजामा (कपिंग प्रक्रिया) का प्रशिक्षण

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 9–17 मई को क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में कपिंग प्रक्रिया पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण के लिए परिषद के महानिदेशक प्रो. रईस–उर–रहमान ने अल फ़ारूक़ यूनानी मैडिकल कॉलिज, इन्दौर के प्रो. अब्दुल क़वी को आमंत्रित किया था। वह एक अवसर पर कपिंग प्रक्रिया में प्रो. अब्दुल क़वी की निपुणता से प्रभावित हुए थे।

इस व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के विभिन्न संस्थानों के 29 अनुसंधान अधिकारी प्रशिक्षित हुए। इसी प्रकार का प्रशिक्षण 8 से 11 जून तक क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पटना के अधिकारियों को भी प्रो. अब्दुल क़वी द्वारा प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में अपने उद्घाटन सम्बोधन में डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप–महानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य इस प्रक्रिया में हुई प्रगति के सैद्धान्तिक व प्रोयोगिक ज्ञान को बांटने के अतिरिक्त प्राचीन संघटित चिकित्सा को प्रोत्साहित करना और विभिन्न रोगों में इसकी प्रभावकारिता और उपयोगिता से लाभान्वित होना है।

अपने प्रस्तावना भाषण में डॉ. मौ. फ़ाज़िल ख़ा, प्रभारी अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने कहा कि परिषद् द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रशिक्षित स्टाफ द्वारा विभिन्न संस्थानों में इस प्राचीन तकनीक को क्रियान्वित किया जाएगा। उन्होनें बताया कि हिजामा तकनीक को सही ढंग से क्रियान्वित करने पर इसके कोई दुष्प्रभाव नज़र नहीं आते।

प्रो. अब्दुल क़वी द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण के साथ सैद्धान्तिक प्रशिक्षण की शरूआत हुई, उन्होनें इस तकनीक की विधि को बताने के साथ–साथ अपने चिकित्सीय अनुभव भी लोगों को बताए। उन्होनें कुछ रोगियों पर कपिंग का जीवंत निरूपण किया।

प्रशिक्षण सत्र, जो प्रातः 9 बजे से शाम 4 बजे तक रखा गया था, में शोधकर्त्ताओं का रोगियों पर प्रशिक्षण किया गया। जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, गठिया, अवसाद, सर्वाइकल स्पॉडिलोटिस, हाइपरटेन्शन, संधिवात, हाइपोथाइरॉइडिज़्म आदि के कुल 70 रोगियों को इस तकनीक द्वारा उपचारित किया गया। यह उपचार शोधकर्त्ताओं द्वारा विशेषज्ञ की निगरानी में दिया गया। उपचार का परिणाम संतोषजनक रहा।

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पटना में प्रशिक्षण कार्यक्रम दो बैचों में 8 जून से 11 जून तक चला, प्रो. अब्दुल क़वी ने जीवंत निरूपण द्वारा तकनीक का प्रशिक्षण लंच से पहले व बाद दो बैंचों में संस्थान के अधिकारियों को दिया।

• *रिपोर्टः नियाज़*

इनपुटः शाइस्ता / अनुवादः सलीम

प्रो. अब्दुल क़वी केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में हिजामा पर आयोजित प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को कपिंग प्रक्रिया का जीवंत प्रशिक्षण देते हुए।

किताब-उल-मिआ फ़ित-तिब का पुनः मुद्रण

परिषद् ने यूनानी चिकित्सा की परम्परागत एवं दुर्लभ पुस्तकों की पुनः मुद्रण योजना के अन्तर्गत हाल में ही किताब उल–मिआ फ़ित–तिब, खण्ड–1 का पुनः मुद्रण किया है। यह ग्रंथ चिकित्सा पद्धति पर मध्यकालीन विख्यात फ़ारसी चिकित्सक अबु सहल मसीही (मृ.1010) की एक प्रतिष्ठित कृति है। उन्हें ज़करिया राज़ी (मृ.925), अली इब्न–अल– अब्बास–अल –मजूसी (मृ.994) और इब्न सिना (मृ.1037) सहित यूनानी चिकित्सा जगत के सर्वाधिक प्रभावशाली लेखकों में से एक माना जाता है।

इब्न सिना के गुरु कहे जाने वाले अबुसहल मसीही, अबुल अब्बास मामून इब्न मामून ख़वारिज़्म शाह (मृ.1017) के दरबार के छः महान विद्वानों में से एक थे। उन्हें अल–मुततब्बिब और अल–मन्तिक़ी की उपाधि से, उनके तक्रशास्त्र, और चिकित्सा विज्ञान में निपुणता के कारण नवाज़ा गया। अल मसीही ने दर्शनशास्त्र और चिकित्साशास्त्र व अन्य विषयों पर बारह किताबें रचित की, परन्तु सर्वाधिक प्रसिद्ध ''किताब अल मिआ फ़ित–तिब'' है। इब्न अल तिलमिज़ (1073–1165) ने इस पर एक व्याख्या लिखी और निज़ामी अरुज़ी (मृ.1160) ने चिकित्सा पाठ्यक्रम में इसको शामिल करने की संस्तुति की।

किताब–उल–मिआ फ़ित–तिब, जैसा कि इसके शीर्षक से इंगित है, में सौ अध्याय शामिल हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस पुस्तक की उच्च शैक्षणिक महत्ता होने के बावजूद न तो इसका अनुवाद किया गया और नही इसको पूर्ण रूप से छापा गया यहां तक कि लेटिन भाषा, जिसमें अधिकतर मध्यकालीन चिकित्सा कार्य का अनुवाद किया गया, भी इससे अछूती रही। इसके प्रथम बीस अध्याय

किताब–उल–मिआ फ़ित–तिब

1963 में किताब उल मिआ फ़ित तिब अल मुजल्लद अल अव्वल के शीर्षक से सम्पादन के बाद हैदराबाद से प्रकाशित हुए। परिषद् ने 2008 में इस संस्करण का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया और साहित्यिक अनुसंधानिक कार्यक्रम के अन्तर्गत किताब–उल–मिआ के बाक़ी 80 अध्ययन का अनुवाद व सम्पादन कार्य को शामिल किया है।

मौजूदा पुस्तक हैदराबाद से प्रकाशित बीस मूल अध्यायों का पुनः प्रकाशन है। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने इस पुस्तक को पाठक अनुकूल बनाने और आधुनिक मानकों से संबद्ध करने हेतु कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को प्रकाशन में सम्मिलित किया है। इसमें एक अग्रसारण जोड़ा गया है जो इस प्रकाशन का सक्षिंप्त परिचय और इसकी पृष्ठभूमि के बारे में बताता है।

स्वास्थ्य एवं रोगों से सम्बन्धित विषयों के विवरण में मसीही का सैद्वान्तिक व दार्शनिक दृष्टिकोण दिखाई देता है और लक्षण व निदान के प्रायोगिक पहलुओं पर कम महत्व दिया गया है। एक मुख्य बिन्दु, जो इस कार्य को अन्य यूनानी चिकित्सीय कार्य से अलग करता है, वह इसकी मौलिकता हे। लेखक ने अपने समकालीन चिकित्सकों से इतर अन्य प्राचीन चिकित्सकों का संदर्भ नहीं दिया है। दूसरे चिकित्सकों द्वारा वर्णित एक अध्याय में दिए गए विषयों को पृथक–पृथक अध्याय में दिया है। उदाहरण के तौर पर किताब इल्मुल ग़िज़ा, किताब अल अग़जिया अल मुफ़रदा और किताब मवाद अल अग़ज़िया तीन अलग अध्यायों में वर्णित किए गए हैं जबकि दूसरे चिकित्सकों ने इन विषयों को केवल एक शीर्षक किताब–अल–अग़ज़िया में वर्णित किया है।

आशा की जाती है कि केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् का यह प्रकाशन यूनानी चिकित्सा पद्धति से जुड़े शोधकर्त्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और सम्पूर्ण यूनानी चिकित्सा जगत इसका स्वागत करेगा।

• *अमानुल्लाह / अनुवादः सलीम*

औषधियों की मात्रा रूपों के रूपांकन पर संगोष्ठी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 09 मई को नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में यूनानी औषधियों के मात्रा रूपों के रूपांकन पर संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्देश्य मधुमेह के लिए शर्करा रहित मिश्रित औषधियों का रूपांकन, बच्चों के लिए सिरप, मात्रा कटौती, और उनके स्वाद व स्थिरता में सुधार से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श करना था।

प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् 9 मई को नई दिल्ली में परिषद् द्वारा औषधियों के मात्रा रूपों के रूपांकन पर संगोष्ठी में बोलते हुए। मंच पर बैठे विशेषज्ञ हैं (बायें से दायें) डॉ. खालिद एम. सिद्दीक़ी, हकीम अनवार अहमद, डॉ. मोहम्मद ख़ालिद सिद्दीक़ी और प्रो. ए.बी. ख़ां।

अपने प्रस्तावना भाषण में केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक प्रो. रईस–उर–रहमान ने कहा कि यूनानी साहित्य में औषधियों के 100 से अधिक रूप मिलते हैं, आवश्यकता इस बात की है कि इन मिश्रणों की प्रचलित शक्लों को रूपांतरित किया जाए ताकि आधुनिक जीवन शैली के कारण उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं के उपचारानुसार उनकी स्वीकार्यता बढ़े, उन्होनें इस बात पर बल दिया कि किसी भी क़ीमत पर यूनानी चिकित्सा सिद्धातों से समझौता नहीं होना चाहिए।

प्रो. ए.बी. ख़ान, पूर्व डीन, यूनानी संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ ने कहा कि औषधियों के नवरूपाकिंत रूप को अपनाने से पहले इसके प्रचलित रूप से इसकी नैदानिक प्रभावोत्पादकता की तुलना को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

प्रो. एम.ए. जाफ़री, अध्यक्ष, वैज्ञानिक सलाहकार समिति, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने कहा कि यूनानी औषधियों के प्रचलित रूप सैकड़ों सालों से प्रयोग मे हैं परन्तु आज के समय में उनके स्वाद और अधिक मात्रा के कारण उसमें कुछ कमियां नज़र आती हैं। उन्होनें कहा कि दवा की शक्ल में तब्दीली करना एक नई दवा के प्रथम स्तर के अध्ययन के समतुल्य होगा।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. मोहम्मद ख़ालिद सिद्दीक़ी, पूर्व महानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने कहा कि दवाओं के रूपांतर की आवश्यकता महसूस होती है। परन्तु यूनानी सिद्धान्तों पर समझौता होने पर संदेह भी पैदा होता है। उन्होनें कहा कि संघटित चिकित्सा (रेजीमेनल थेरेपी)

के स्टैन्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर्स (एस.ओ. पी.) तैयार करने से इसकी उपयोगिता बढ़ेगी।

अध्यक्षीय भाषण में हकीम अनवार अहमद, पूर्व वरिष्ठ फ़ैकल्टी, आयुर्वेद एण्ड यूनानी तिब्बिया कॉलिज, दिल्ली यूनिवर्सिटी ने कहा कि परिवर्तित औषधीय रूप से लोगों के बीच यूनानी चिकित्सा को प्रचारित करने में सहायता होगी। उन्होनें बताया कि ये औषधियां वायरस जनित बीमारियों में भी पूर्णतयाः कारगर हैं। डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप–महानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने उद्घाटन सत्र का समापन लोगों का आभार व्यक्त कर किया।

उद्घाटन के बाद शुरू हुए सत्र में संगोष्ठी में दो व्यापक पैनल चर्चा हुई जिनमें यूनानी मिश्रणों का शर्करा रहित मात्रा रूप, मात्रा में कमी अनुरूपता, स्वाद, शेल्फ़ लाइफ़, स्थिरता और सुरक्षित पैकिंग विषय शामिल थे।

संगोष्ठी में यह निश्चय किया गया कि यूनानी औषधियों का पुर्नरूपाकंन यूनानी सिद्धांतों व दवाओं की क्षमता से समझौता किए बग़ैर होना चाहिए। यह निर्णय भी लिया गया कि औषधि विकास में संलग्न भेषजीय संस्थानों के साथ सहयोग किया जाना चाहिए और बहुरंग अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत रूचि की अभिव्यक्तिनुसार प्रस्ताव आमंत्रित किए जाने चाहिए। इस पर भी सहमति बनी कि प्रथम अवस्था में आवश्यक औषधि सूचि से तीव्र क्रियाशील मिश्रणों को लिया जाए और एक हर्बल केन्द्र बनाया जाए।

पैनल चर्चा के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रो. शाकिर जमील, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि मिश्रणों से शर्करा को निकालने से औषधियों की प्रभावोत्पादकता प्रभावित हो सकती है। प्रो. के.एम. वाई. अमीन, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ ने कहा कि शक्ररा का रोल प्रच्छादन या सरंक्षण से बढ़कर है। इसलिए इनकी शक्लों को बदलने की तुलना में इनके स्थानापन्न खोजना बेहतर होगा। डॉ. श्रीकान्त गौड़, सैन्टिस फ़ार्मा ने कहा कि मिश्रणों में शक्ररा का रोल स्थापित होने के बाद ही इसको निकालने पर विचार करना चाहिए। प्रो. इदरीस अहमद, आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बिया कॉलिज, नई दिल्ली ने कहा कि शक्ररा की 3–4 ग्राम मात्रा एक मधुमेह रोगी के रक्त शक्ररा स्तर पर कोई कुप्रभाव नहीं डालेगी बल्कि कुछ मात्रा रूपों को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। डॉ. सग़ीर अहमद सिद्दीक़ी, हक़ीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने बताया कि केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने शक्ररा रहित मिश्रण किट औषधियों के रूप में विकसित किए थे अब उनको पुर्नसमाविष्ट करने की आवश्यकता है। श्री कफ़ील अहमद, मैनेजर, दवाख़ाना तिब्बिया कॉलिज, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ का विचार था कि पुर्नरूपांकन के स्थान पर, मधुमेह रोगियों के लिए पृथक औषधियों का विकास ज़रूरी है। डॉ. आसिम अली ख़ान, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि परिवर्तन से पहले हमें

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा नई दिल्ली में 9 मई को आयोजित औषधियों की मात्रा रूपों के रूपांकन पर संगोष्ठी के श्रोतागण का एक दृश्य।

नई दिल्ली में 9 मई को आयोजित औषधियों की मात्रा रूपों के रूपांकन पर संगोष्ठी के तकनीकी सत्र का एक दृश्य।

परम्परागत और नव रूपांकित मिश्रण के भौतिकीय, रासायनिक और जैव वैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

चर्चा में अन्य आंमत्रित विशेषज्ञों में प्रो. नईम अहमद ख़ान, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, डॉ. मुज़य्यना ख़ातून, एम.सी. डी., नई दिल्ली, डॉ. ओ.पी. अग्रवाल, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, डॉ. राशिदुल्लाह ख़ान, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली, डॉ. शारिक़ अली ख़ान, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, अलीगढ़ और श्री मोहसिन देहलवी, देहलवी रेमेडीज़ शामिल थे। इनके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित यूनानी चिकित्सक, शिक्षाविद, औषधि निर्माता, औषधि नियन्त्रण विशेषज्ञ और परिषद् मुख्यालय व संस्थानों के शोधकर्त्ताओं ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी का समापन डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी के समापन सम्बोधन के साथ हुआ।

• *रिपोर्टः नियाज़*

इनपुटः शाइस्ता / अनुवादः सलीम

अरब प्रतिनिधि द्वारा परिषद् के साहित्यिक संस्थान का दौरा

ख्याति प्राप्त अरब प्रतिनिधि डॉ. अली अब्दुल करीम अल बलजी, डिप्टी डायरेक्टर, गल्फ़ सैन्टर फ़ॉर स्ट्रैटजिक स्टडीज़, सऊदी अरब ने परिषद् के हक़ीम अजमल ख़ां साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली का दौरा किया।

परिषद् के अधिकारियों से वार्तालाप के दौरान डॉ. अली ने चिकित्सा पर्यटन के भाग के तौर पर यूनानी चिकित्सा पद्धति को प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. मौहम्मद अय्यूब नदवी अध्यक्ष, अरबी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के साथ दौरे पर आए डॉ. अली यूनानी चिकित्सा साहित्यिक अनुसंधान में विशिष्टता प्राप्त संस्थान में परिषद् द्वारा प्रकाशित यूनानी चिकित्सा पद्धति की पुरातन अरबी ग्रन्थों को देखकर अत्यधिक हर्षित हुए। वह इस तथ्य से भी प्रभावित हुए कि भारत में शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास की उत्तम आधारभूत संरचना मौजूद हैं। सऊदी अरब में इस पद्धति की स्थिति के बारे में अवगत कराते हुए उन्होनें बताया कि वहां के निवासी स्वास्थ्य की इस साकल्यवादी पद्धति में रूचि रखते हैं परन्तु दुर्भाग्यवश इसके प्रचार व विकास के लिए गम्भीर प्रयास नहीं हो पाए हैं।

डॉ. अली ने संस्थान के सभी अनुभागों का दौरा किया और वह ओ.पी.डी. में हिजामा थैरपी देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुए।

• *रिपोर्टः नियाज़*

इनपुटः एस.ए. सिद्दीकी

उत्तराखण्ड के चकराता वन खण्ड में औषधीय पौधों का सर्वेक्षण

परिषद् के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, अलीगढ़ में कार्यरत शोधकर्त्ताओं ने उत्तराखण्ड राज्य के चकराता वन खण्ड, देहरादून में औषधीय पौधों का प्रजाति–वनस्पतीय सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी समूहों द्वारा औषधीय वनस्पतियों पर पारस्परिक ज्ञान को प्रलेखित करने के अतिरिक्त यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रयोग होने वाले औषधीय पौधों की उपलब्धता और वितरण पर सूचना एकत्र करना था।

चकराता वन खण्ड उत्तराखण्ड के देहरादून जनपद के उत्तर पश्चिमी भाग में 30° 25′ 30° 28′ उत्तरी अक्षांतर और 77° 37′ 77° 43′ पूर्व देशांतर पर कुल 361684.4 हैक्टेयर में फैला हुआ है। इसको उत्तरी सीमाएं उत्तरकाशी जनपद और हिमाचल प्रदेश का कुछ भाग दक्षिण में दून घाटी, पूर्व में यमुना नदी और पश्चिमी सीमा हौंस नदी से मिलती है। इस खण्ड में छः वन श्रृखंलाएं रिवर, कनासर, रिखनार, पाबर, देवगढ़, और मोल्टा शामिल हैं। सम्पूर्ण वन खण्ड एवं पर्वतीय भू–भाग है। इस क्षेत्र का उच्चतम फैलाव समुद्र तल से 540 मीटर से 3200 मीटर तक है। इस वन खण्ड में शंकुधारी, रोडोन्ड्रॉन और ओक वन बहुतायत से पाए जाते हैं और इस क्षेत्र में वन सम्पदा की विश्वास पात्र संरक्षक जौंसर बावर जनजाति काफी संख्या में पाई जाती है। कृषि व पशु–पालन यहां का मुख्य व्यवसाय है। दूध उत्पादन, ऊन और मांस व्यापार स्थानीय अर्थव्यवस्था का अभिन्न भाग है। इस क्षेत्र के बहुसंख्यकों द्वारा जौंसरी भाषा बोली जाती है।

इस कार्य के दौरान कुछ वनस्पतीय सम्पन्न वन क्षेत्र जैसे चकराता, सइया, भुजकोटी, डकरा, देववन, खारम्बा, कोन्टालनी व्यास, इन्दरॉली, कनासर, टुइना, लोटाखड़, औली आदि का सर्वेक्षण किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि यह क्षेत्र औषधीय पादप सम्पदा से सम्पन्न है। क्षेत्र से 138 औषधीय प्रजातियों के 415 वनस्पतीय नमूने एकत्र किए गए। मुख्य यूनानी औषधीय पादपों में अख़रोट (*जुगलेंस रिजिया* एल.) बनफ़शा (*वायोला स्पेसीज़* एल.), ब्राह्मी (*सेन्टेला एसियेटिका* (एल.) अरबन), चीड़ (*पाईनस रॉक्सबरजाई* सार्ज.), चिराएता शीरी (*स्वर्टिया एन्गास्टिफ़ोलिया* बुक. हाम. एक्स डी. डॉन.), दारे–हल्द (*बरबेरिस एरिस्टेटा* डी. सी.), धावा (*बुडफ़ोर्डिया फ़्रटिकोज़ा* (एल.) कुर्ज़), जुफ़ते बलूत (*करकस ल्यूकोट्राईकोफ़ोरा* ए. केमस), कबाबे खन्दान (*ज़ेन्थेज़ाईलम आरमेटम* डी.सी.), कायफ़ल (*माईरिका एस्कुलेंट* हाम. एक्स डी. डॉन), मज़ीठ (*रूबिया कॉर्डिफ़ोलिया* एल.), मालकंगनी (*सिलास्ट्रस पेनिकुलेटस* विलड.), पखानबेद (*बर्जिनिया लिगूलेटा* ऐंगिल.), समन्दर फल (*रहुस पार्वीफ़लोरा* रोक्स्ब.) सेंभल (*बोम्बेक्स सीबा* एल.), शाह बलूत (*एस्कुलस इन्डिका* कॉलिबर. एक्स केम्ब.), टगर (*वेलेरियाना हार्डविकी* वाल.), ज़रनब (*एबीज पिड्रों* स्पेक.) इत्यादि शामिल हैं।

सतपुरा (*डैफ़ने पेपाइरेसिया* वालिच एक्स स्टुड)

कबाबे खन्दान (*ज़ेन्थेज़ाईलम आरमेटम* डी.सी.)

पखानबेद (*बर्जिनिया लिगूलेटा* ऐंगिल.)

कनासर के देवदार जंगल का एक दृश्य

औषधीय पादपों के एकत्रण के अतिरिक्त, सर्वेक्षण टीम ने स्थानीय चिकित्सकों और गांव के बुज़ुर्गों से साक्षात्कार के फलस्वरूप विभिन्न मानवीय एवं पशु रोगों के उपचार से सम्बन्धित 26 लोक दावे रिकॉर्ड किए। सामान्यतः लोक औषधियों के तौर पर प्रयोग होने वाले कुछ पौधे इस प्रकार हैं। बूशियां (*यूपेटोरियम एडेनोफ़ोरम*) पत्तियों का लेप कटे पर लगाया जाता है। चरचड़ा (*रूबिया कॉर्डिफ़ालिया*) पत्ती का लेप बिच्छू काटे पर लगाया जाता है। छमरऊ (*आर्टिमिज़िया रॉक्सबर्जियाना* बैस) की जड़ का जोशांदा पेट दर्द में उपयोगी है। दारिम्ब (*प्यूनिका ग्रेनेटम*) के तने की छाल का जोशांदा जॉन्डिस में पिलाया जाता है। देवदार (*सिड्रस देवदार*) की लकड़ी का तेल खुजली में उपयोगी है। क्रिगोर (*बरबेरिस लाइसियम*) की जड़ का रस आंखों की लाली में बूंद–बूंद कर डालते हैं। कुटकी (*पिक्रोरहाईज़ा कुरुआ*) की जड़ का जोशांदा ल्युकोरिया में दिया जाता है। नीलकंठ (*अजूगा पार्विफ़्लोरा*) की पत्तियों का लेप सामान्य सूजन में किया जाता है। पत्थर चूर (*बर्जीनिया लिगुलाटा*) की पत्तियां पकाकर प्रयोग की जाती हैं और जड़ का लेप बवासीर में उपयोगी है। सतपुरा (*डैफ़ने पेपाइरेसिया*) की छाल का लेप शरीर के जले हुए भाग पर लगाया जाता है। सोपऊ (*थैलिक्ट्रम फ़ोलियोलोसम*) की जड़ का जोशांदा जॉन्डिस में पिलाया जाता है। तिरायमन (जेन्टियाना कुरू) की पत्तियों का जोशांदा पेशाब की रूकावट में दिया जाता है। थूनर (*टेक्सस बकाटा*) के तने की छाल का जोशांदा नज़ला में देते हैं।

शोधकर्त्ताओं ने जीवन पद्धति, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों, स्वास्थ्य एवं रोग, शिक्षा, व्यवसाय और व्यापार, उगाई जाने वाली फ़सलों व क्षेत्र के लोगों की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं पर सूचनाएं एकत्र कीं। अपरिष्कृत दवाओं के कुछ नमूने प्रामाणिक औषधियों के तौर पर म्यूज़ियम में प्रदर्शन हेतु एकत्र किए गए। अक़रक़रहा, पखानबेद, ब्रह्मी बूटी, कुटकी और धावा के बालवृक्ष संस्थान के औषध उद्यान में उगाने हेतु एकत्र किए गए। अध्ययन में विभिन्न कारणों से वन में विलुप्त हो रहे तथा कुछ संकटापन्न औषधीय पौधों जैसे–*एकोनिटम हेट्रोफ़ाईलम* (अतीस), *एकोरस कलेमस* (बच्छ), *बरबेरिस एशियाटिका* (दारहल्द), *बर्जिनिया लिगूलेटा* (पखानबेद), *हेडिशियम स्पाईकेटम* (कपूरकचरी), *पिकरोरहाईज़ा कुरूआ* (कुटकी), *स्वर्टिया एन्गस्टिफोमिया* (चिरायता शीरी), *टेक्सस बकाटा* (तालिस पत्र), *थैलिक्ट्रम फ़ोलियोलोसम* (पियांरगा), *वेलेरियाना जटामांसी* (सुंबुलुतिब) पर भी जानकारी एकत्र की गई।

सर्वेक्षण टीम का नेतृत्व श्री ज़हीर अनवर अली, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति) द्वारा किया गया और इसमें हक़ीम सरफ़राज़ अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), श्री परवेज़ अहमद, अनुसंधान सहायक (वनस्पति), श्री सुहेल अहमद, ड्राईवर और श्री ज़मररूद अली, क्षेत्र परिचारक शामिल थे।

• *रिपोर्टः अमीनुद्दीन*
इनपुटः जहीर अनवर अली, सरफराज अहमद एवं पर्वेज अहमद

सेवाओं पर वैश्विक प्रदर्शनी में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 23 से 25 अप्रैल 2015 को प्रगति मैदान में सेवाओं पर वैश्विक प्रदर्शनी (जी.ई.एस.) के प्रथम संस्करण में भागीदारी की। इस प्रदर्शनी का आयोजन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा सर्विसिज़ एक्सपोर्ट प्रमोशन काउन्सिल और कन्फ़ीडरेशन ऑफ़ इन्डियन इन्डस्ट्री के सहयोग से सर्विस सैक्टर को एक वैश्विक दृश्यता देने के उद्देश्य से किया गया।

जी.ई.एस. का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया जबकि डॉ. हर्षवर्धन केन्द्रीय मंत्री, विज्ञान एवं तकनीक व भू मत्रांलय, श्री जगत प्रकाश नड्डा, केन्द्रीय मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, श्रीमती स्मृति ईरानी, केन्द्रीय मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्री कलराज मिश्र, केन्द्रीय मंत्री, सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम मंत्रालय, श्री रविशंकर प्रसाद, केन्दीय मंत्री, संचार एवं सूचना तकनीक मंत्रालय और श्रीमती निर्मला सीतारमण, राज्य मंत्री (स्वतन्त्र), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रलाय उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे।

समापन सत्र श्री अरूण जेटली, केन्द्रीय मंत्री, वित्त एवं सूचना व प्रसार मत्रांलय द्वारा सम्बोधित किया गया। स्वास्थ्य देखभाल, सूचना एवं तकनीक, टूरिज़्म, मीडिया एवं मनोरंजन, सचांर तंत्र, व्यवसायिक सेवाएं, शिक्षा अंतरिक्ष और अनुसंधान व विकास जी.ई. एस. के केन्द्रीय विषय थे। प्रदर्शन में विभिन्न खण्डों के 300 से अधिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शक और 55 देशों के 500 विदेशी प्रतिनिधि शामिल थे। इस प्रदर्शनी में प्रासंगिक विषयों पर आधारित सेमिनार और कॉन्फ्रेंस भी हुई।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने इस वैश्विक कार्यक्रम में भागीदारी की और अपने पंडाल द्वारा अनुसंधानिक कार्यक्रम और अन्य सम्बन्धित कार्यक्रमों की उपलब्धियां दर्शाईं। परिषद् ने आगंतुकों को निःशुल्क साहित्य वितरण, पोस्टर और विचार–विमर्श द्वारा अपनी गतिविधियों व उपलब्धियों का प्रचार प्रसार किया। यूनानी चिकित्सा के निवारक और प्रोत्साहक पहलुओं पर प्रचार व सूचना सामग्री आंगतुकों में वितरित की गई। परिषद् के अनुसंधान अधिकारी डॉ. शाइस्ता उरूज, डॉ. अहमद सईद और डॉ मेराजुल हक़ ने फ़ार्मा कम्पनियों, कॉर्पोरेट अस्पतालों और ग़ैर सरकारी संस्थानों के प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत और कम्पनी स्तर पर यूनानी औषधियों के प्रयोग पर वार्तालाभ किया। परिषद् के स्टाल का राष्ट्रीय और किरगिज़्स्तान, रूस व सऊदी अरब के विदेशी प्रतिनिधियों ने दौरा किया।

• *रिपोर्ट: शाइस्ता एवं नियाज़*
अनुवाद: सलीम

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *वर्ष में छः बार प्रकाशित होता है। जनवरी 2014 से यह सिर्फ अंग्रेज़ी की बजाय हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ़्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं।* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *में प्रकाशित सामग्री को* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।*

महानिदेशक व मुख्य संपादक:
प्रो. रईस–उर–रहमान

कार्यकारी संपादक:
मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समिति:
खालिद एम. सिद्दीक़ी
ज़कीउद्दीन
सलीम सिद्दीक़ी
शाइस्ता उरूज

संपादकीय कार्यालय:
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
61–65, इंस्टीटयूशनल एरिया, समुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

दूरभाष: +91–11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
फैक्स: +91–11/28522965
ई–मेल: unanimedicine@gmail.com
वेबसाइट: www.ccrum.net

मुद्रण: रैक्मो प्रैस प्रा. लि.
सी–59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1
नई दिल्ली–110020

ISSN 0974 1666

CCRUM newsletter

A Bi-monthly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 35 • Number 3-4 May–August 2015

AYUSH Wellness Clinic at President's Estate

The President of India, Shri Pranab Mukherjee inaugurated a new AYUSH Wellness Clinic (AWC) at the President's Estate on 25 July to mark the completion of the third year of his Presidency. The clinic has been established by the Rashtrapati Bhawan, with the help of Ministry of AYUSH, to promote and provide the holistic healthcare services offered by the indigenous medicine systems, collectively known as AYUSH, to the residents of the President's Estate.

Inaugurating the AWC, the President said that in the three years of his Presidency numerous measures have been taken for the welfare of the residents of the President's Estate. He extended his gratitude to the Government of India and entire staff of the Rashtrapati Bhawan for their support in making various initiatives successful.

The AWC is a unique project where all the AYUSH systems namely Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Siddha and Homoeopathy have come together to meet the medical needs of the President, officials of the President's Secretariat and residents of the President's Estate under one roof. The Ministry of AYUSH, through its respective Research Councils, is currently catering to the manpower requirement and medical facilities of the clinic located in Schedule B of the President's Estate.

The Hon'ble President, escorted by Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM), visited the Unani wing and appreciated the efforts made in making various regimenal therapies related facilities available.

The Inaugural function was attended by Shri Najeeb Jung, Lieutenant Governor of Delhi; Shri Shripad Naik, Minister of State

Shri Pranab Mukherjee, Hon'ble President of India inaugurating AYUSH Wellness Clinic at President's Estate on 25 July. On his left are Shri Najeeb Jung, Lieutenant Governor of Delhi and Shri Shripad Naik, Minister of State (I/C) for AYUSH.

Shri Pranab Mukherjee, Hon'ble President of India being briefed by Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM about the various facilities available at Unani wing of AYUSH Wellness Clinic.

(I/C) for AYUSH; Mrs. Meenakashi Lekhi, Member of Parliament from New Delhi constituency; Mrs. Omita Paul, Secretary to the President of India; Mr. Nilanjan Sanyal, Secretary (AYUSH) to the Government of India; Prof. Rais-ur-Rahman, Director General (DG), CCRUM and DGs of other Research Councils of AYUSH, besides higher officials of the President's Secretariat.

• ***Niyaz***

Workshop to improve knowledge of Official Language

The Commission for Scientific and Technical Terminology (CSTT) organized a two-day workshop on Official Language at National Council of Educational Research and Training, New Delhi during 29–30 June. The workshop aimed to improve the knowledge of Official Language among Official Language Officers of the offices associated with the Town Official Language Implementation Committee.

Inaugurating the workshop, Prof. Keshari Lal Verma, Chairman, CSTT informed that the Commission has developed Administrative Terminology in 22 languages and played crucial role in the publication of scientific magazines and literary publications. He further informed that the Supreme Court of India has made it mandatory for agencies preparing books for schools to use terminologies coined by the Commission. He asked the Officers attending the workshop to organize workshops on Official Language in their offices and benefit from the schemes of the Commission.

Mr. Indradev Shukla, Assistant Director, Crime Record Bureau, who was the chief guest for the event, said that in order to promote the use of Official Language and not limit it to the elite class, it is necessary to make it simple and avoid difficult words. He expressed his concern that the readers are maintaining distance from the language due to its difficulties. He also advocated that common words should be adopted in Hindi language and terminologies of other languages be included in the Official Language.

In the technical sessions, eight lectures on various aspects of Official language and the role of the CSTT in its implementation were delivered by experts. Dr. Salim Siddiqui, Research Officer (Unani) and In-charge of Official Language Section at the Central Council for Research in Unani Medicine participated in the workshop and benefited.

• ***Niyaz with inputs from Salim***

International Yoga Day Celebrations

Yoga – A journey from I to We; Self to Universe: PM

The 21st June scripted a new chapter in the history of the nation as India celebrated and made 192 countries of the world celebrate first International Day of Yoga after the United Nations General Assembly, accepting Prime Minister Shri Narendra Modi's proposal, proclaimed 21st June as International Yoga Day. The celebrations at New Delhi included a massive Yoga demonstration and a two-day International Conference organized by the Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India.

Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi greeting the audience at the inaugural function of International Conference on Yoga for Holistic Health organized by the Ministry of AYUSH during 21–22 June at New Delhi. On the PM's right are Shri Shripad Naik, Union Minister of State (I/C) for AYUSH, Dr. Nagendra and Shri Nilanjan Sanyal, while on the left are Shri Jayant Sinha, Minister of State for Finance and Yoga exponent Baba Ramdev.

Inaugurating the International Conference on Yoga for Holistic Health, Hon'ble Prime Minister described Yoga as a journey from "*Aham to Vayam; Sva to Samasti*" (I to we; Self to Universe). He said that if we perceive our human body to be a unique creation, then Yoga is similar to a "user manual" that made one aware of the immense capabilities of that creation. He further termed it as a means to achieve harmony with oneself, one's body, surroundings and nature.

The Prime Minister also released commemorative coins of Rs. 10 and Rs. 100 and a stamp of Rs. 5, to mark the occasion of the first International Day of Yoga.

Speaking on the occasion, Shri Shripad Yesso Naik, Minister of State (I/C) for AYUSH said that Yoga is one of the greatest gifts of this country to the entire mankind. He also pointed out that the health aspect of Yoga has become most significant and modern medicine has also started recognizing its value.

The Minister of State for Finance Shri Jayant Sinha, and Yoga exponents Baba Ramdev, Dr. Nagendra and Dr. Veerendra Heggade also spoke on the occasion.

Earlier, the day kicked off with a massive yoga demonstration involving 35,985 participants on a 1.4 km segment of Rajpath. It started with a speech by the Prime Minister, who also participated in Yoga demonstration. The event included school children, national cadet corps, central army forces, women police officers, union ministers, diplomats, foreign nationals, and people from Yoga institutions.

The officials of the Central Council for Research in Unani Medicine and other organizations under the Ministry of AYUSH were engaged in the preparations and organization of the events and made their best efforts to make them successful.

• ***Niyaz***

CCRUM participates in National Arogya Expo 2015

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) participated in National Arogya Expo 2015 held at Thiruvananthapuram, Keral during 21–24 May. The Arogya was organized by the Ministry of AYUSH, Government of India in association with World Ayurveda Foundation, Kerala Government and Rajiv Gandhi Centre for Biotechnology to foster the growth of AYUSH systems and popularising them among the common man.

Dr. N. Zaheer Ahmed briefing foreign visitors about Unani System of Medicine at CCRUM's pavilion in National Arogya Expo 2015.

Inaugurating the event on 20 May, Union Minister of State for AYUSH (Independent Charge), Shri Shripad Yesso Naik said that AYUSH (Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy) services would be improved at all levels from primary health centres to All India Institute of Medical Sciences (AIIMS). Stating that India would sign MoUs on bilateral ties with other countries to set up Indian alternative medicine centres, he said that so far, Hungary, Bangladesh, Mauritius and Nepal have signed pacts in this regard.

Speaking on the occasion, Shri V.S. Sivakumar, Minister of Health & Family Welfare, Government of Kerala said that AYUSH department under the state government would start functioning by next week. Mr. Nilanjan Sanyal, Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India also addressed the audience at inaugural function.

The expo had about 300 stalls from 200 companies. As many as 17 stalls from the subordinate organizations of the Ministry of AYUSH displayed their products and services. Three seminars and a workshop related to health and Indian systems of medicine were also part of the event. The event also had AYUSH clinics for the general public with focus on diabetes, preventive cardiology, neurology, oncology, women health, child health, elderly care, etc. It attracted about 700 delegates from around the country, and people from various sectors including medical practitioners, diplomats, marketing strategists, professionals, policy makers, and students.

The CCRUM participated in the expo and provided free treatment to about 280 patients through a team of Unani physicians from its Central Research Institute of Unani Medicine, Hyderabad and Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai. Dr. N. Zaheer Ahmed, Dr. Kabiruddin Ahmed, Dr. Md. Ismail and Dr. K.B. Ansari delivered lectures on various diseases. The Council's stall also highlighted its activities and progress in research activities through display boards, brochures, success stories, dossier, etc. The stall also showcased other important publications of the Council like National Formulary of Unani Medicine and Unani Pharmacopoeia of India.

• ***Niyaz***

Symposium on Hakim Ajmal Khan

Jamia to establish Unani medical college

Jamia Millia Islamia (JMI) is thinking of and making efforts for establishing a Unani medical college, besides an allopathic medical college, stated its Vice Chancellor Prof. Talat Ahmad at a day-long Symposium on Hakim Ajmal Khan organized by the CCRUM's literary research institute recently relocated in the campus of Jamia and renamed as Hakim Ajmal Khan Institute for Literary and Historical Research in Unani Medicine (HAKILHRUM) on 19 May at New Delhi.

The event was the first of its kind organized by the CCRUM in the campus of Jamia after a Memorandum of Understanding (MoU) for collaboration in literary research, medico-historical research and interdisciplinary research in various areas of Unani Medicine was signed between the two institutions on 28 April. It was only after this MoU that the CCRUM's literary research institute was relocated from Jamia Hamdard, New Delhi in the building of Dr. M.A. Ansari Health Centre of the JMI.

In his presidential address, Prof. Talat Ahmad said that it was a moment of celebration for him to address the symposium on Hakim Ajmal Khan, one of the illustrious founders of Jamia. He termed the MoU between Jamia and CCRUM a historical decision saying that it would provide opportunities to researchers from different disciplines to come up together for research and development in their respective fields. He said that there was a possibility that researchers from Jamia's Departments of Bio-chemistry and Bio-technology and the CCRUM might conduct collaborative research. He stressed the need to identify some thrust areas where they can be leaders. 'There is also a possibility that a Diploma course may be introduced in Jamia in collaboration with the CCRUM', he added.

Speaking on the occasion, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM said that Hakim Ajmal Khan was an outstanding personality who played very important role in the development of Unani Medicine in the country at a time when the system was passing through a phase of crisis. 'It is because of his efforts that Unani practitioners play crucial role in health care delivery in the rural and far-flung areas where allopathic doctors hardly exist', he added. Advocating to adopt Unani Medicine he said that the system has potential to treat various non-communicable diseases that have no effective treatment in Modern Medicine. Highlighting the governmental interest in the system,

Prof. Rais-ur-Rahman, Prof. Talat Ahmad and Mr. Irshad Ahmad giving standing ovation to Prof. Abdul Haque as Dr. Khalid M. Siddiqui is presenting him a memento at the inaugural function of Symposium on Hakim Ajmal Khan held at Jamia Millia Islamia on 19 May.

he informed that the Government of India was going to establish All India Institute of Unani Medicine in Ghaziabad, U.P.

In his keynote address, Prof. Abdul Haq, formerly Head, Department of Urdu, University of Delhi said that Hakim Ajmal Khan contributed tremendously to the promotion of Unani Medicine in India which also led to the promotion of Urdu language. Highlighting an unlit area of Unani Medicine, he said that Unani medical colleges were one of the major forces behind the promotion of Urdu in the country as education was imparted there through the medium of this language. He further said that Unani literature had also contributed substantially to the promotion of Urdu. He emphasized the need to upgrade Ayurvedic & Unani Tibbia College of University of Delhi at Karol Bagh to a university and also suggested that Jamia should establish a Unani college in its campus, in addition to introducing a Diploma course in Unani Medicine in collaboration with the CCRUM.

Addressing the inaugural session, Mr. Irshad Ahmad, President, AMU Old Boys Association, Delhi, who was guest of honour for the occasion, said that the personality of Hakim Ajmal Khan was a combination of four very important features. He was a great Unani physician, an outstanding politician, an educationist, and a symbol of unity in diversity. He termed the establishment of HAKILHRUM in the campus of Jamia a great tribute to Hakim Ajmal Khan.

Earlier in his welcome address, Dr. Sagheer A. Siddiqui, Research Officer In-charge, HAKILHRUM extended gratitude to Prof. Talat Ahmad and Mr. Irshad Ahmad for providing much-needed space in Jamia and playing important role in bridging the gap between the CCRUM and Jamia, respectively.

Dr. Ahmad Syeed, Research Officer (Unani), HAKILHRUM proposed vote of thanks to the distinguished guests and participants.

In the technical session of the symposium that was chaired by Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM, four papers on various aspects of the life and contributions of Hakim Ajmal Khan were presented. The first of the four papers entitled '*Scientific Legacy of Unani Medicine and Hakim Ajmal Khan*' was presened by Hakim K.A.S. Azmi, Consultant, HAKILHRUM. Hakim Raziul Islam Nadvi of Tasneefi Academy, Jamat-e-Islami Hind presented his paper on *'The role of Hakim Ajmal Khan in the establishment and stabilization of Jamia Millia Islamia'*. Hakim Fakhr-e-Alam, Research Officer (Unani), HAKILHRUM presented his paper on *'Hakim Ajmal Khan, Unani Medicine and Jamia Millia Islamia'* while the last paper of the symposium was presented by Hakim Ahmad Sayeed, Research Officer (Unani), HAKILHRUM on *'National and medical movements and Hakim Ajmal Khan'*.

The symposium was attended by academicians from Jamia Millia Islamia and Officers of the CCRUM from its headquarters and institutes/units in the NCR.

• ***Niyaz***

A view of the august audience at the Symposium on Hakim Ajmal Khan organized at Jamia Millia Islamia, New Delhi on May 19.

Orientation workshop on research methodology

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) organized a two-day orientation workshop on research methodology during 8–9 June at its headquarters in New Delhi. The workshop aimed at sensitizing new Research Officers to fundamentals and methodologies of research and activities and functioning of the Council in the area of research in Unani Medicine.

Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM addressing the workshop.

Speaking at the valedictory session on 9 June, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM said that research in herbal medicines run around three things – (a) the medicines that we are giving to the patients are pure – this needs quality control and drug standardization; (b) the treatment we are giving to the patients is efficacious – this needs good clinical practice and clinical trials; and (c) the drugs we are giving to the patients are safe – this needs preclinical trials. It is matter of satisfaction that the CCRUM has been working for years on all these aspects.

Earlier in his welcome address on 8 June, Prof. Rais-ur-Rahman said that the CCRUM had done a lot in the area of research but emphasized that there was need to do even more to validate the safety and efficacy of Unani drugs. He further said that World Health Organization recognized Unani Medicine as one of the best systems practiced all over the world, but it was concerned about the safety of drugs used in the system. Addressing the researchers, he said that research is a passion and complete dedications is needed for conducting good research and achieving its objectives.

Dr. Khalid M. Siddiqui addressing the orientation workshop on research methodology organized by the Central Council for Research in Unani Medicine at New Delhi during 8–9 June. On the dais are (left to right) Prof. Rais-ur-Rahman, Prof. Y.K. Gupta, and Prof. K.M.Y. Amin.

Speaking in the inaugural session, Prof. K.M.Y. Amin, Aligarh Muslim University (AMU), Aligarh said that Unani System of Medicine is a science that has some unique principles and researchers need to master them before conducting study. Differentiating Unani Medicine from Western Medicine, he said that the relation between the two systems is not the relation of old and new but that of two different modes. Unani Medicine discusses with the body in the light of *Mizaj* (temperament) which is a super physical, whereas the Western Medicine discusses with the body in the light of molecules, which are sub-physical.

Prof. Y.K. Gupta, Head, Department of Pharmacology, All India Institute of Medical Sciences,

A view of audience at the orientation workshop on research methodology organized by the Central Council for Research in Unani Medicine at New Delhi during 8–9 June.

New Delhi said that researchers should add something new to the science in order to make it evolve, else that science would be stagnant. Emphasizing the importance of creating evidence in research he further said that there are three things – perception, experience and evidence, and the research is related to the third one which is required today. He also laid emphasis on publication and documentation of research and said that not to publish research results is a crime and if something is not documented, it is as it has not happened.

Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM also addressed the session and hoped that the newly recruited Research Officers would be great assets for the Council.

In the technical sessions, Prof. Y.K. Gupta, Prof. K.M.Y. Amin, Dr. Roli Mathur, Indian Council of Medical Research (ICMR) and Prof. A. Ray, Vallabhbhai Patel Chest Institute delivered lectures on *'Conception of research question and formulating research methodology and strategy for research in Unani Medicine', 'Efficacy and safety evaluation of Unani drugs', 'Ethical guidelines, CTRI and regulatory requirements for biomedical and health research',* and *'Mechanism of action, PK and PD studies of Unani drugs'* respectively.

Dr. Khalid M. Siddiqui made a comprehensive presentation on the background and infrastructure of Unani Medicine in India, principles of Unani System of Medicine, history of CCRUM as well as its research activities and achievements.

Speaking on '*scientific paper writing and publication ethics',* Dr. N.C. Jain, ICMR informed that there might be as much as 20 authors and more than one corresponding authors for a single paper. He also spoke at length about plagiarism, retraction and other misconducts.

Dr. Srikant Gaur from Sentiss Pharma, and Dr. Shariq Ali Khan, Dr. Qamar Uddin and Dr. Nighat Anjum from CCRUM also delivered presentations on *'Informed consent process and documentation', Research methodology for evaluation of efficacy of Fasd', 'Methodological aspects of designing a patient information sheet'* and *'Understanding clinical trial protocol'* respectively.

Apart from the eleven newly recruited Research Officers (Unani), the workshop was attended by Officers from CCRUM headquarters and its institutes/units in the NCR.

• ***Niyaz***

Hands-on training on *Hijama*

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) organized a Hands-on training on *Hijama* (cupping procedure) at its Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), New Delhi during 9-17 May. Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM, impressed by the expertise of Prof. Abdul Qawi of Al-Farooq Unani Medical College, Indore in cupping procedure at a different occasion, had invited him to train the CCRUM's officers.

During this extensive training programme, 29 Research Officers of the CCRUM from its different Institutes/Units in the National Capital Region were given firsthand experience of this unique regimenal therapy in two batches.

In his inaugural address at RRIUM, New Delhi, Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM said that the objective of organizing that training programme was to revive and promote the age-old regimenal therapy and exploit its potentials and benefits in curing various diseases, besides training its manpower and imparting theoretical and practical knowledge of recent advances in cupping procedure.

Earlier in his introductory remarks, Dr. Mohammad Fazil Khan, Research Officer In-charge, RRIUM, New Delhi said that the Council had organized the training programme to develop skilled manpower in order to employ the ancient technique at its different institutes. He also informed that *Hijama* has no side effects if it is applied properly.

Prof. Abdul Qawi (Left) making the participants apply cupping procedure on a patient during hands-on training on Hijama at New Delhi.

The theoretical training started with a detailed presentation by Prof. Abdul Qawi who besides elaborating on the method and technique of this procedure shared his personal experience during his medical practice. He also gave live demonstration of wet cupping on few patients.

In the practical sessions that continued from 9 AM to 4 PM during the period of training, the researchers were taught and made to perform on the patients. A total of 70 patients suffering from joint pain, arthritis, gout, backache, sciatica, depression, cervical spondylitis, frozen shoulder, hypertension, hypothyroidism, etc. were treated through this procedure by the researchers under the supervision of the expert. The response of the treatment was quite satisfactory.

A similar training programme was also organised at RRIUM, Patna during 8–11 June. Prof. Abdul Qawi trained the Officials of the Institute for application of the procedure through live demonstration and hands-on training in two batches in pre-lunch and post-lunch sessions.

• ***Niyaz with inputs from Shaista***

Kitab al-Mi'a fi't Tibb reprinted

The Council, under its scheme of reprinting rare and classical books of Unani Medicine, has recently brought out reprint of Kitab al-Mi'a fi't Tibb, volume-I. The book is a classical work of the distinguished medieval Persian physician Abu Sahl al-Masihi (d.1010) on complete system of Medicine. He is regarded as one of the most prolific and influential writers on Unani Medicine.

Abu Sahl al-Masihi, supposed by some to be the teacher of Ibn Sina, was one of the six great scholars who graced the court of Abu'l-Abbas Ma'mun ibn Ma'mun Khwarismshah (d.1017). He was titled with Al-Mutatabbib and Al-Mantiqi for his command over medicine and logic. Al-Masihi authored about twelve books on different subjects, more importantly on philosophy and medicine. Of the many works he produced, Kitab Izhar Hikmat Allah Ta'ala fi Khalq al-Insan (Book on Exposition of the Wisdom of God in the Creation of Man), according to Ibn Abi Usayb'a (d.1270), is the best but most famous is Kitab al-Mi'a fi't Tibb. Ibn al-Tilmiz (1073-1165) wrote a gloss on it and Nizami Aruzi (d.1160) recommended for its inclusion in medical curriculum.

Kitab al-Mi'a fi't Tibb, as the title suggests, consists of one hundred separate chapters. It is very unfortunate that despite having high academic value Kitab al-Mi'a was neither ever translated, even into Latin in which most of the medieval medical works were translated, nor published in totality.

Kitab al-Mi'a fi't Tibb

Only the first twenty chapters were published after editing from Hyderabad in 1963 with the title Kitab al-Mi'a fi't Tibb al-Mujallad al-Awwal. The Council taking the lead had published Urdu translation of this edition in 2008 and placed the editing and translation of remaining 80 chapters of Kitab al-Mi'a on the agenda of its Literary Research Programme.

The present book is reprint of those twenty chapters originally published from Hyderabad. The CCRUM has added some important values to the publication in order to make it reader-friendly and relevant to the modern standards. A foreword has been added that provides brief introduction and background of the publication. It also has computer typesetting, paper of good quality, hard binding and attractive cover.

Masihi's theoretical and philosophical approach prevails in this book in discussing details about issues related to health and disease and lesser importance is given to practical and experimental aspect of symptomatology and therapeutics. A key feature that distinguishes this work from other works on Unani Medicine is its originality, as the author, unlike most of his contemporaries, does not cite references of ancient physicians. Another feature is that the subjects that have been described in one chapter by others are separately treated in chapters in this work. For instance, Kitab Ilm al-Ghidha'; Kitab al-Aghdhiya al-Mufrada; and Kitab Mawad al-Aghdhiya are treated as three separate chapters, while these topics have been described under one single heading 'Kitab al-Aghdhiya' by others.

It is hoped that this publication would be of great use for researchers and welcomed by the entire Unani fraternity.

• ***Amanullah***

Symposium on redesigning of dosage forms of medicines

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) organized a symposium on *Redesigning of dosage forms of Unani formulations* on 9 May 2015 at its headquarters in New Delhi. The symposium aimed to discuss various aspects of the topic including designing of sugar-free formulations for diabetics, syrup/suspension for paediatric uses, dose reduction, and improvement in palatability and stability.

Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM speaking at the symposium on redesigning of dosage forms of medicines held at New Delhi on 9 May. Experts on the dais are (left to right) Dr. Khalid M. Siddiqui, Hakim Anwar Ahmad, Dr. Mohammad Khalid Siddiqui and Prof. A.B. Khan.

In his introductory remarks, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM said that there were over 100 dosage forms in Unani literature and there was need to redesign conventional forms of formulations into the ones that can increase their acceptability and suit the health conditions arisen due to modern-day lifestyle. However, he emphasized that the fundamentals of Unani Medicine should not be compromised at any cost.

Prof. A.B. Khan, Former Dean, Faculty of Unani Medicine, Aligarh Muslim University (AMU), Aligarh stated that before rolling out a redesigned form, its clinical efficacy should be necessarily compared to that of the conventional ones.

Prof. M.A. Jafri, Chairman, Scientific Advisory Committee, CCRUM said that Unani formulations in their conventional forms had been in use for hundreds of years but they had some drawbacks in the modern-day due to non-palatability and bulkiness. He also pointed out that any change in the form would invite phase-I studies as the drug would be considered as new one.

In his inaugural address, Dr. Mohammad Khalid Siddiqui, formerly Director General, CCRUM said that the need for redesigning had been felt intensely but doubts regarding compromise on the Unani fundamentals had cropped up time and again. He urged that Standard Operating Procedures (SOPs) of Ilaj bit Tadbir (Regimenal therapies)

should be prepared to enhance its utility.

Delivering the presidential address, Hakim Anwar Ahmad, formerly Senior Faculty at Ayurvedic & Unani Tibbia College, University of Delhi anticipated that redesigned Unani drugs would be helpful in the propagation of Unani System of Medicine among masses. He also stated that classical drugs were effective in combating different disease conditions of viral origin also.

Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM summed up the inaugural session and thanked the august gathering.

In the post-inaugural sessions, the symposium had two extensive panel discussions and deliberated sugar-free dosage forms, decrease in dosage bulk, compatibility and palatability, shelf-life, stability and safe packaging of Unani formulations. The symposium resolved that redesigning of Unani formulations should be done without compromising on the fundamentals of Unani Medicine and efficacy of the drugs. It was decided that collaboration with pharmaceutical institutions engaged in drug development should be sought and proposals under Extramural Research Scheme should be invited through expression of interest. It was also agreed upon that fast-acting formulations from Essential Drugs List should be taken up in the first phase and a herbal hub be created.

Expressing his views during panel discussions, Prof. Shakir Jamil, Jamia Hamdard, New Delhi said that removal of sugar from the formulations might affect the efficacy of drugs. Prof. K.M.Y. Amin, AMU, Aligarh said that the role of sugar was more than masking or preservation. Therefore, it was better to find alternates than to change their forms, unless it was very necessary. Dr. Srikant Gaur, Sentiss Pharma said that removal of sugar from compound formulations should be considered only after establishing its role as an inert substance. Prof. Idris Ahmad, Ayurvedic & Unani Tibbia College, New Delhi was of the view that though 3–4 grams of intake of sugar would not adversely affect the blood glucose level of a diabetic patient but there was a need to modify some of the dosage forms. Dr. Sagheer A. Siddidqui, Hakim Ajmal Khan Institute of Literary and Historical Research in Unani Medicine, New Delhi said that CCRUM had already developed some sugar-free formulations as kit medicines that needed to be reintroduced. Mr. Kafeel Ahmad, Manager, Dawakhana Tibbiya College, AMU, Aligharh was of the view that instead of redesigning, separate drugs should be developed for diabetics. Dr. Asim Ali Khan, Jamia Hamdard, New Delhi felt that there was a need to innovate, but before

A view of audience at the symposium on redesigning of dosage forms of medicines organized by the Central Council for Research in Unani Medicine at New Delhi on 9 May.

A view of technical session of the symposium on redesigning of dosage forms of medicines at New Delhi on 9 May.

doing so we should look into the physical, chemical and biological aspects of the classical and newly redesigned formulations.

Other experts invited for discussions included Prof. Naim Ahmed Khan, AMU, Aligarh; Dr. Muzayyana Khatoon, MCD, New Delhi; Dr. O.P. Agarwal, Indian Council of Medical Research, New Delhi; Dr. Rashidullah Khan, Vice-President, Central Council of Indian Medicine, New Delhi; Dr. Shariq Ali Khan, Regional Research Institute of Unani Medicine, Aligarh; Mr. Mohsin Dehlvi, Dehlvi Remedies. Besides, various other eminent Unani Physicians, academicians, drug manufacturers, drug control experts, and researchers of the Council from its headquarters and institutes in the National Capital Region attended the symposium. The symposium ended with the valedictory remarks by Dr. Khalid M. Siddiqui.

• ***Niyaz with inputs from Shaista***

Arab delegate visits Council's literary institute

The Council's Hakim Ajmal Khan Institute for Literary and Historical Research in Unani Medicine at Jamia Millia Islamia (JMI), New Delhi was visited by a distinguished Arab delegate Dr. Ali Abdul Kareem Al-Balaji, Deputy Director of Gulf Centre for Strategic Studies, Saudi Arabia.

Interacting with the Officers of the Institute, Dr. Ali stressed the need to propagate Unani System of Medicine as a part of Medical Tourism. Accompanied by Prof. Mohammad Ayub Nadwi, Head, Department of Arabic, JMI, he was very delighted to visit an institute specialized in literary research in Unani System of Medicine and see the classical Arabic texts of the system published by the CCRUM. He was also impressed by the fact that India had such a good infrastructure for education, research and development, and practice of Unani Medicine. Apprising of the status of the system in Saudi Arabia, he informed that the people there had keen interest in this holistic system of health but it was unfortunate that sincere efforts were not made for its propagation and development.

Dr. Ali visited all the sections of the institute and was very happy to see *Hijama* therapy being practiced in the OPD.

• ***Niyaz with inputs from S.A. Siddiqui***

Ethno-botanical survey of Chakrata forests division

The Council's researchers from Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Aligarh recently conducted an ethno-botanical survey of Chakrata Forest Division, Dehradun in the State of Uttarakhand. Besides documenting traditional knowledge on medicinal flora used by the indigenous communities, the main objective of the survey was to collect information on availability and distribution of existing medicinal plants especially those used in Unani Medicine.

Chakrata forest division lies in the north-western part of Dehradun district of Uttarakhand between 30° 25′ – 30° 28′ N latitude and 77° 37′ – 77° 43′ E longitude with a total area of 361684.4 hectare. It is bounded by Uttarkashi district and some parts of Himachal Pradesh in the North, Doon valley in the South, Yamuna River in the East and Tons River in the West. This division has six forest ranges, viz., River, Kanasar, Rickhnar, Pabar, Devgad and Molta. The entire division is a hilly terrain. Altitudinal stretch of the region ranges between 540 msl and 3200 msl. The division is blessed with Coniferous, Rhododendron and Oak forests. It is mostly populated by Jaunsar-bawar tribes which are the authentic and intimate repository of wisdom on plant wealth of the area. Agriculture and animal husbandry are the main occupations. Milk products, wool and meat are an integral part of local economy. Jaunsari language is spoken by most of the people of this region.

During the field work, some vegetationally rich forest areas, viz., Chakrata, Saia, Bhujkoti, Dakra, Deovan, Kharamba, Kontalani, Viyas, Indroli, Kanasar, Tuina, Lotakhad, Auli, etc. were surveyed. The study revealed that the area is rich in medicinal plant wealth. Altogether 415 botanical specimens of 138 medicinal taxa of plants with relevant information were collected from the area. The collection included many important Unani medicinal plants such as Akhrot (*Juglans regia* L.), Banafsha (*Viola spp.* L.), Brahmi (*Centella asiatica* (L.) Urban), Chir (*Pinus roxburghii* Sarg.), Chiraita Shirin (*Swertia angustifolia* Bach.-Ham. ex D. Don.), Dar-e-Hald (*Berberis aristata* DC.), Dhawa (*Woodfordia fruticosa* (L.) Kuntz.), Juft-e-baloot (*Quercus leucotrichophora* A. Camus), Kabab-e-Khandan (*Zanthoxylum armatum* DC.), Kaiphal (*Myrica esculenta* Ham. ex D. Don), Majeeth (*Rubia cordifolia* L.), Malkangni (*Celastrus paniculatus* Willd.), Pakhanbed (*Bergenia ligulata* Engl.), Samandar Phal (*Rhus parviflora* Roxb.), Sainbhal (*Bombax ceiba* L.), Shah baloot (*Aesculus indica* Colebr. ex Camb.), Taggar (*Valeriana hardwickii*

Satpura (*Daphne papyracea* Wallich ex Steud.)

Kabab-e-Khandan (*Zanthoxylum armatum* DC.)

Pakhanbed (*Bergenia ligulata* (Wall.) Engler)

A view of Deodar forest in Kanasar

Wall.), and Zarnab (*Abies pindrow* Spach.), etc.

Besides the collection of medicinal plants, the survey team also recorded 26 folk medicinal claims for treating various diseases and conditions of human and cattle through interviews with local medicine men and other knowledgeable village elders. Some of the plants that are commonly used as folk drugs include 'Bushiyan' (*Eupatorium adenophorum* Spr.) - Leaf paste is applied on cut; 'Charchara' (*Rubia cordifolia* L.) - Leaf paste is applied locally on scorpion sting; 'Chhamrau' (*Artemisia roxburghiana* Bess.) - Root decoction is taken to relieve stomach-ache; 'Darimb' (*Punica granatum* L.) - Stem bark decoction is given orally for jaundice; 'Deodar' (*Cedrus deodara* (Roxb. ex Lambert) G. Don) - Wood-oil is applied on scabies; 'Kingor' (*Berberis lycium* Royle) - Root extract is instilled in eyes for redness; 'Kutki' (*Picrorhiza kurrooa* Royle ex Benth.) - Root decoction is taken in leucorrhoea; 'Neelkanth' (*Ajuga parviflora* Benth.) - Leaf paste is applied on general swelling; 'Pattharchoor' (*Bergenia ligulata* (Wall.) Engler) - Cooked leaves are taken as pot herb and the root paste is given for piles; 'Satpura' (*Daphne papyracea* Wallich ex Steud.) - Bark paste is applied on burns; 'Sopau' (*Thalictrum folilosum* DC.) - Root decoction is given for jaundice; 'Tirayaman' (*Gentiana kurroo* Royle) - Leaf decoction is given for anuria; 'Thuner' (*Taxus baccata* L.) - Stem bark decoction is given for common cold.

The researchers also gathered information on mode of life, socio-economic conditions, health and diseases, education, occupation and trade, cultivable crops, religious, social and cultural traditions of the inhabitants of the area. A few samples of crude drugs were also collected from their natural habitats for display in the museum as authentic drugs. Saplings of *Anacyclus pyrethrum, Bergenia ligulata, Centella asiatica, Picrorhiza kurrooa and Woodfordia fruticosa* were collected for ex-situ conservation in the herb garden of the Unit.

This study also yielded information on some endangered medicinal plants such as *Aconitum heterophyllum* (Atis), *Acorus calamus* (Bach), *Berberis asiatica* (Dar Hald), *Bergenia ligulata* (Pakhanbed), *Hedychium spicatum* (Kapoorkachri), *Picrorhiza kurrooa* (Kutki), *Swertia angustifolia* (Chiraita Shirin), *Taxus baccata* (Talis Patr), *Thalictrum foliolosum* (Piaranga), *Valeriana jatamansi* (Sumbul Teeb) that are becoming scarce in the forest due to various causes.

The survey team was headed by Mr. Zaheer Anwar Ali, Research Officer (Botany) and included Hakim Sarfaraz Ahmad, Research Officer (Unani); Mr. Parwez Ahmad, Research Assistant (Botany), Mr. Sohail Ahmad, Driver and Mr. Zamarrut Ali, Field Attendant.

• ***Aminuddin with inputs from Zaheer Anwar Ali, Sarfaraz Ahmad and Parwez Ahmad***

CCRUM Participates in GES

Registration No. 34691/80

The Central Council for Research in Unani Medicine participated in the first edition of Global Exhibition on Services (GES) organized by the Ministry of Commerce and Industry in association with Services Export Promotion Council (SEPC) and Confederation of Indian Industry (CII) at Pragati Maidan from 23 to 25 April 2015. The exhibition aimed to provide the service sector a global visibility.

The GES was inaugurated by Honorable Prime Minister Shri Narendra Modi, while Union Minister for Science & Technology & Earth Sciences Dr. Harsh Vardhan, Union Minister for Health & Family Welfare Shri Jagat Prakash Nadda, Union Minister for Human Resource Development Smt. Smriti Zubin Irani, Union Minister for Micro, Small and Medium Enterprises Shri Kalraj Mishra, Union Minister for Communications and Information Technology Shri Ravi Shankar Prasad, and Minister of State for Commerce and Industry (Independent Charge) Smt. Nirmala Sitharaman were present in the inaugural session.

The valedictory session was addressed by Shri Arun Jaitley, Minister of Finance, Corporate Affairs and Information and Broadcasting.

Healthcare, Information and Technology, Tourism, Media and Entertainment, Logistics, Professional Services, Education, Space, and Research and Development were among the focus sectors of the GES. The exhibition attracted over 300 national and international exhibitors from various sectors and 500 foreign delegates from 55 countries. It also witnessed participation of 18 Indian states. The event had a series of seminars and conferences on relevant sectors.

The CCRUM participated in this global event and showcased its achievements in the research programmes and other allied activities through its stall. The Council also disseminated information on its activities and achievements through distribution of free literature, posters and interactions with the visitors. The Council's Research Officers Dr. Shaista Urooj, Dr. Ahmed Sayeed and Dr. Merajul Haq deployed at the stall interacted with representatives from pharmaceutical companies, corporate hospitals and NGO's from various sectors in order to make them try Unani Medicine at individual and corporate levels. The Council's stall was visited by national as well as foreign delegates including those from Kyrgyzstan, Russia and Saudi Arabia.

• ***Shaista and Niyaz***

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter *is published six times a year. Since January 2014 it is published bilingually in Hindi and English instead of being published in English only. It contains news chiefly about the work of Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is free of charge to individuals as well as organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the* CCRUM Newsletter *may be reproduced provided credit is given to the* CCRUM Newsletter *and provided such reproduction is not used for commercial purposes.*

Director General & Editor-in-Chief:
Prof. Rais-ur-Rahman

Executive Editor:
Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board:
Khalid M. Siddiqui
Zakiuddin
Salim Siddiqui
Shaista Urooj

Editorial Office:
CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE
61-65, Institutional Area, Opp. 'D' Block,
Janakpuri, New Delhi - 110 058 (India)

Telephone : +91-11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
Fax : +91-11/28522965
E-mail: unanimedicine@gmail.com
Website: www.ccrum.net

Printed at: Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020